

द. आंतरिक शत्रुओं पर नियंत्रण

धाक जमाई : शिवाजी महाराज के चारों ओर बारह मावल के मावले इकट्ठे हुए। शिवाजी महाराज जो कहते; वे वही करते। वे ऐसा मानते थे, 'जीना है तो स्वराज्य के लिए और मरना है तो स्वराज्य के लिए।' वे सीधे-सादे मराठा थे। शिवाजी महाराज उन्हें प्राणप्रिय थे परंतु ऐसे भी कुछ लोग थे; जिन्हें शिवाजी महाराज के कार्य से ईर्ष्या होती थी। ऐसे लोगों पर नियंत्रण रखना शिवाजी महाराज के लिए आवश्यक हो गया था।

खंडोजी और बाजी घोरपड़े नामक मराठा सरदार आदिलशाह की नौकरी में थे। आदिलशाह ने उन्हें शिवाजी महाराज के विरुद्ध भड़काया। कोंढाणा प्रदेश में उन्होंने बड़ी अराजकता फैला दी थी। मगर शिवाजी महाराज ने उनकी दाल न गलने दी। उन्होंने उन्हें वहाँ से मार भगाया।

फलटण के बजाजी नाईक-निंबालकर शिवाजी महाराज के साले थे। शिवाजी महाराज को उनके विरुद्ध लड़ना पड़ा फिर भी निंबालकर घराने के अन्य व्यक्ति शिवाजी महाराज के साथ रहे।

शिवाजी महाराज के सुपे परगना में उनका एक रिश्तेदार संभाजी मोहिते था। उसने भी शिवाजी महाराज के विरोध में कारवाइयाँ शुरू की। शिवाजी महाराज ने सुपे परगना में जाकर उसे बंदी बना लिया और उसे कर्नाटक राज्य में भेज दिया। शिवाजी महाराज कर्तव्य के आगे रिश्तों-नातों को नहीं मानते थे।

जावली के चंद्रराव मोरे : शिवाजी महाराज के कार्य की महानता को सभी मावलों ने स्वीकार

किया। उनका नाम चारों ओर गूँजने लगा। शिवाजी महाराज प्रजा के राजा बन गए किंतु यह बात कुछ लोगों की आँखों में खटकती थी। जावली के मोरे ऐसे लोगों में से एक थे। मोरे जावली के जागीरदार थे। उनकी जागीर रायगढ़ से कोयना घाटी तक थी। वे बीजापुर के आदिलशाह के जागीरदार थे। आदिलशाह ने उन्हें 'चंद्रराव' की उपाधि दी थी। जावली में बड़े घने जंगल थे। वहाँ दिन में भी सूर्य की किरणों का प्रवेश नहीं होता था। उसमें बाघ, भेड़िये, भालू आदि जंगली जानवर रहते थे। मोरे की जावली मतलब बाघ का जाल ही थी। इस कारण कोई भी मोरे को छेड़ने की हिम्मत नहीं करता था लेकिन यह साहस वीर शिवाजी महाराज ने कर दिखाया।

कारण यह था ई.स. १६४५ में दौलतराव मोरे का देहांत हो गया। अतः उनके उत्तराधिकारियों में झगड़े शुरू हो गए। शिवाजी महाराज ने यशवंतराव मोरे की सहायता की। उनकी सहायता से यशवंतराव मोरे जावली की गद्दी पर चंद्रराव के रूप में बैठे। उस समय यशवंतराव ने शिवाजी महाराज को नजराना देना स्वीकार किया। उनके कार्य में सहायता देना भी स्वीकार किया परंतु गद्दी पर बैठते ही वह सब कुछ भूल गया। कौन शिवाजी महाराज और कैसा वादा ! वह उपेक्षापूर्ण से व्यवहार करने लगा। स्वराज्य के प्रदेशों पर आक्रमण करना, प्रजा को कष्ट देना आदि विभिन्न प्रकार की हरकतें यशवंतराव करने लगा। शिवाजी महाराज जान गए कि यदि इसी समय मोरे को सही रास्ते पर न लाया गया

तो स्वराज्य को क्षति पहुँचेगी ।

विद्रोह करने पर मारे जाओगे : शिवाजी महाराज ने यशवंतराव को पहले एक कठोर पत्र लिखा, 'आप स्वयं को राजा कहलवाते हैं । राजा तो हम हैं । भगवान शंकर ने हमें राज्य दिया है । इसलिए आप अपने-आपको राजा न कहलवाएँ ।'

यशवंतराव मोरे ने उद्दंडता से उत्तर दिया, 'आप कल राजा बने हैं । आपको राज्य किसने दिया ? जावली आओगे तो उलझन में फँस जाओगे । हमें ईश्वर की कृपा से आदिलशाह ने राजा की उपाधि, छत्र-चामर और सिंहासन मेहरबान होकर दिया है । यदि आप यहाँ आएँगे तो परिणाम बुरा होगा ।'

शिवाजी महाराज ने उसे चेतावनी दी, 'जावली छोड़कर, राजा की उपाधि और छत्र-चामर फेंककर, रूमाल से हाथ बाँधकर मिलने और हमारी सेवा

करने के लिए चले आओ । इतने पर भी यदि गद्दारी करोगे तो मारे जाओगे ।'

जावली के चारों ओर घना जंगल था । रायरी का किला जीतना कठिन था । मोरे के पास आदमी भी बहुत थे । जावली जीतना सरल न था । पूरी तैयारी के साथ शिवाजी महाराज ने जावली पर आक्रमण किया । लगभग एक महीने तक यशवंतराव लड़ता रहा लेकिन उसके बहुत-से सैनिक मारे गए । अंत में वह अपने बेटों को लेकर रायरी के किले में भाग गया । शिवाजी महाराज ने जावली को जीत लिया और रायरी की ओर बढ़े । शिवाजी महाराज ने रायरी के किले को घेर लिया । यशवंतराव तीन महीने तक पूरी शक्ति के साथ लड़ता रहा परंतु अंत में उसे आत्मसमर्पण करना पड़ा ।

रायगढ़ किला : जावली की विजय बड़ी महत्वपूर्ण थी । इससे शिवाजी महाराज के



रायगढ़

स्वराज्य का विस्तार पहले से दुगुना हो गया । यशवंतराव की सेना भी शिवाजी महाराज से आकर मिल गई । रायरी का विशाल किला स्वराज्य के अंतर्गत आ गया । इससे शिवाजी महाराज बहुत

प्रसन्न हुए । उन्होंने इस किले का नाम 'रायगढ़' रखा । उसके बाद उन्होंने पासवाली भोरप्या पहाड़ी पर एक नया किला बनवाया । उसका नाम रखा 'प्रतापगढ़' ।



स्वाध्याय



१. गलत जोड़ी पहचानो :

- | | | |
|-----------|---|----------|
| (अ) फलटण | - | निंबालकर |
| (आ) जावली | - | मोरे |
| (इ) सुपे | - | जाधव |

२. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

- (अ) जावली के मोरे को आदिलशाह ने कौन-सी उपाधि दी थी ?
- (आ) जावली की विजय महत्त्वपूर्ण क्यों थी ?

३. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखो :

- (अ) जावली के मोरे को छेड़ने की हिम्मत कोई क्यों नहीं कर पाता था ?
- (आ) शिवाजी महाराज ने यशवंतराव मोरे को कौन-सा कठोर पत्र भेजा ?

उपक्रम

- (अ) रायगढ़ के चित्रों का संग्रह करो ।
- (आ) दिवाली की छुट्टियों में अपने मित्रों के साथ रायगढ़ की प्रतिकृति तैयार करो ।



6I4JUL